यूपी में पंचायतों की राजस्व प्राप्तियाँ सबसे ज़्यादा

चर्चा में क्यों?

वित्तीय वर्ष 2022-23 के लिये **भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI)** द्वारा हाल ही में जारी '**पंचायती राज संस्थानों का वित्त**' शीर्षक से **रिपोर्ट भारत में** पंचायती राज संस्थानों (PRI) की वित्तीय गतिशीलता पर प्रकाश डालती है।

मुख्य बिंदु:

- **राज्य राजस्व हिस्सेदारी और अंतर-राज्य असमानताएँ:**
  - अपने-अपने राज्य के राजस्व में पंचायतों की हिस्सेदारी न्यूनतम बनी हुई है।
    - उदाहरण के लिये, **आंध्र प्रदेश में, पंचायतों की राजस्व प्राप्तियाँ** राज्य के स्वयं के राजस्व का **केवल 0.1% है,** जबकि **उत्तर प्रदेश में यह 2.5% है, जो राज्यों में सबसे अधिक है।**
  - प्रति पंचायत अर्जित औसत राजस्व को लेकर राज्यों में व्यापक भिन्नताएँ हैं।
    - **केरल और पश्चिम बंगाल क्रमशः** 60 लाख रुपए और 57 लाख रुपए प्रति पंचायत के औसत राजस्व के साथ सबसे आगे हैं।
    - असम, बिहार, कर्नाटक, ओडिशा, सिक्किम और तमिलनाडु में प्रति पंचायत राजस्व 30 लाख रुपए से अधिक था।
    - आंध्र प्रदेश, हरियाणा, मिज़ोरम, पंजाब और उत्तराखंड जैसे राज्यों का **औसत राजस्व** 6 लाख रुपए प्रति पंचायत से काफी **कम** है।
- **RBI की सिफारिशें:**
- RBI **अधिक विकेंद्रीकरण को बढ़ावा देने और स्थानीय नेताओं तथा अधिकारियों को सशक्त** बनाने का सुझाव देता है। यह पंचायती राज की वित्तीय स्वायत्तता और स्थिरता को बढ़ाने के उपायों का समर्थन करता है।

पंचायती राज संस्थान

- **73वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1992** ने पंचायती राज संस्थाओं (PRI) को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया और एक समान संरचना (PRI के तीन स्तर), चुनाव, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं महिलाओं के लिये सीटों का आरक्षण तथा **PRI को निधि, कार्यों व पदाधिकारियों का हस्तांतरण** किया।
  - **पंचायतें तीन स्तरों पर कार्य करती हैं:** ग्राम सभा (गाँव या छोटे गाँवों का समूह), पंचायत समितियाँ (ब्लॉक परिषद) और ज़िला परिषद (ज़िला)।
- **पंचायती राज मंत्रालय**, पंचायती राज और पंचायती राज संस्थाओं से संबंधित सभी मामलों को देखता है। इसे मई 2004 में बनाया गया था।
- **यूपी में पंचायतों की संख्या:** 59, 062
- **यूपी में ब्लॉकों की संख्या**: 826
- **यूपी में ज़िलों की संख्या:** 75

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/revenue-receipts-of-panchayats-highest-in-up